07 / 06 / 77 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

संगमयुग को चढती कला सर्व का भला का विशेष वरदान

➢➢ संगमयुग को विशेष वरदानी युग अनुभव करना

➳ _ ➳ अपने को पदमापदम सौभाग्यशाली समझती बाबा से रूह रिहान करती

→ फरिश्ता बन उड चली सूक्ष्म वतन

■ सुखसागर बापदादा की गोदी मे नन्हा फरिश्ता बन बैठ जाती हूं

→ खो जाती हूं उस सुख और आनन्द की लहरों में

➳ _ ➳ मैं विशेष पार्टधारी आत्मा हूं

➳ _ ➳ ऊंचे ते ऊंचे बाप की संतान हूं

→ बापदादा से रंग बिरंगी शक्तिशाली किरणों की मुझ पर वर्षा हो रही है

→ मैं शक्तिशाली किरणों को स्वयं मे समाती जा रही हूं

→ मुझ से निकलती शक्तिशाली किरणों से विश्व की आत्माओं की आशाएँ पूर्ण हो रही है

→ शांति का अनुभव कर रही हैं

→ विश्व की आत्माओं को शांति सुख का अनुभव करा रही हूं

■ चढ़ती कला से सर्व का भला कर रही हूं

→ सत्य बाप का सत्य परिचय देकर विश्व की आत्माओं को सत्य का राह दिखा रही हूं

■ करनकरावनहार बाबा है

→ बाबा मुझ आत्मा को निमित बना उन्हे मुक्ति जीवन मुक्ति का अनुभव करा रहे है

→ सर्व आत्माओं के कल्याण के निमित बना रहे है

→ सर्व आत्माओं की दुआयें मुझ आत्मा के लिए लिफ्ट का काम कर रही है

→ पुरुषार्थ मे तीव्रता का अनुभव कर रही हूं

→ हर कदम पर सकल्प बोल और कर्म करते अटेंशन रखती हूं

■ मैं आत्मा आधारमूर्त हूं

■ उद्धारमूर्त हूं

■ जिम्मेवार हूं

→ ज्ञान को प्रेक्टिकल मे यूज कर पुराने स्वभाव संस्कार को बदल रही हूं

→ ड्रामा के राज को यथार्थ रीति जान मास्टर त्रिकालदर्शी बन रही हूं

■ विजयमाला मे आने के लिए एक बाप की श्रेष्ठ मत पर चल रही हूं

➳ _ ➳ मैं आत्मा कल्प कल्प की विजयी रत्न हूं

→ विकारों पर जीत पाकर मायाजीत जगतजीत बन रही हूं

→ मैं करूंगा होगा या नही

→ हुआ ही पडा है ऐसी निश्चयबुद्धि बन गयी हूं

→ फॉलो फादर करती आगे बढती जा रही हूं

→ एक कदम मे पदमों की कमाई जमा करती जा रही हूं

■ संगमयुग विशेष धर्माऊ युग है वरदानी युग है

■ परमात्म मिलन का युग है

→ एक बाप की याद मे श्रेष्ठ कर्म करते

→ प्रत्यक्ष फल खुशी का अनुभव कर रही हूं

→ अंदर और बाहर से एक समान बनती जा रही हूं

→ संतुष्टमणि बन दूसरो को संतुष्ट कर रही हूं

→ गुणों और खजानों से सम्पन्न बन रही हूं

→ विशेष वरदानी समय में पुरुषार्थ करते महावीर बन गई हूं

→ **महारथी की महानता का अनुभव कर रही हूं**

→ बाप के साथ से समर्थी अनुभव कर रही हूं

→ एक सेकेण्ड में सारे कल्प की तकदीर बना रही हूं

→ हर कदम में चढ़ती कला सर्व का भला का विशेष वरदान अनुभव कर रही हूं

■ **कहां मिलेगा बाबा सतयुग ये तेरा प्यार...**